उसकी रीढ़ ज़रा सी तनी, कोकाकोला हुआ धड़ाम

अशोक पांडे

बीते सोमवार को यानी परसों एक जबरदस्त घटना घटी। फुटबॉल के सुपरस्टार क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने यूरो चैम्पियनशिप के एक मैच के बाद हुई प्रेस कांफ्रेंस में अपने सामने रखीं कोकाकोला की दोनों बोतलें एक तरफ हटा दीं। उसके बाद उन्होंने वहीं रखी पानी की बोतल को उठाकर पत्रकारों को दिखाते हुए कहा – "आगुवा!" यानी पानी! दस सेकेंडों में उन्होंने जता दिया कि सॉफ्ट ड्रिंक्स को लेकर उनका क्या नजरिया है।

रोनाल्डो की इस एक भंगिमा ने यह किया कि कोकाकोला के शेयर गिरना शुरू हो गए। इस घटना का ऐसा जबरदस्त प्रभाव पड़ा कि कुछ ही घंटों के भीतर कम्पनी को चार बिलियन डॉलर यानी करीब 75 अरब रुपयों का नुकसान हो गया। यह गिरावट अब भी जारी है।

खिलाड़ी में रीढ़ की हड्डी साबुत बची हो तो वह अकेला भी दुनिया के सबसे मजबूत दुर्गों में सेंध लगा सकता है।

मुझे उम्मीद है लोग अभी पुलेला गोपीचंद को नहीं भूले होंगे।

सत्तर और अस्सी के दशकों में विश्व के नम्बर एक खिलाड़ी बन गए प्रकाश पादुकोण के रिटायर होने के बाद देश को सैयद मोदी से बहुत उम्मीदें थीं पर 1988 में लखनऊ में उनकी हत्या हो गई। इस त्रासद घटना के कोई दस सालों तक भारतीय बैडमिंटन के दिन कोई विशेष उल्लेखनीय नहीं रहे। फिर आन्ध्र प्रदेश के नलगोंडा में जन्मा एक बेहद प्रतिभाशाली खिलाड़ी इस खालीपन में किसी सनसनी की तरह उभर रहा था। पुलेला गोपीचंद नाम के एक खिलाड़ी की शैली में कई विशेषज्ञों को प्रकाश पादुकोण की झलक दिखाई देती थी, लेकिन 1995 में पुणे में चल रही एक प्रतियोगिता में डबल्स के एक मैच के दौरान गोपीचन्द के घुटने में घातक चोट लगी और उनका करिअर करीब-करीब समाप्त हो गया।

एक सामान्य खिलाड़ी और एक बड़े खिलाड़ी में क्या फर्क होता है, यह अगले एक साल में गोपीचंद ने कर दिखाया। चोट से उबरकर उन्होंने न केवल विश्व बैडमिंटन में अपनी रैंकिंग में उल्लेखनीय सुधार किया बल्कि 2001 में चीन के चेन हांग को हराकर ऑल इंग्लैंड चैम्पियनशिप जीत ली. इसके कुछ माह पहले वे वर्ल्ड नंबर वन को परास्त कर चुके थे।

जैसा कि बाज़ार के इस युग में होना था, तमाम मल्टीनेशनल कंपनियों ने ऑल इंग्लैंड चैम्पियनशिप जीतने के बाद गोपीचंद को नोटिस किया। कोकाकोला ने विज्ञापन के लिए उनसे संपर्क किया और बहुत बड़ी रकम देने का प्रस्ताव किया. लेकिन उस समय तक अपने माता-पिता के साथ किराए के घर में रह रहे पुलेला गोपीचंद ने साफ-साफ मना कर दिया। आमतौर पर बहुत शांत रहने वाले इस खिलाड़ी ने इस बात को कोई तूल नहीं दी, न ही किसी तरह की पब्लिसिटी की। मीडिया तक को इस बात का पता दूसरे स्त्रोतों से लगा।

एक इंटरव्यू में उनसे इस बाबत पूछा गया तो उन्होंने कहा, "चूंकि मैं खुद सॉफ्ट ड्रिंक नहीं पीता, मैं नहीं चाहूंगा कि कोई दूसरा बच्चा मेरी वजह से ऐसा करे। मैं कोई चिकित्सक नहीं हूं, लेकिन मुझे पता है कि सॉफ्ट ड्रिंक्स स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाते हैं और मैंने अपने मैनेजर को इस बारे में साफ-साफ कह रखा है कि मैं किसी भी ऐसे प्रॉडक्ट के साथ नहीं जुड़ूंगा, चाहे वह सॉफ्ट ड्रिंक हो या सिगरेट या शराब।"

पैसे को लेकर भी उनका दृष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट था "मेरे लिए ज़्यादा महत्व उसूलों का है और मैं किसी भी कीमत पर अपने उसूलों को पैसे के तराज़ू पर नहीं तोल सकता।"

क्रिस्टियानो रोनाल्डो के कारनामे ने मुझे न केवल पुलेला गोपीचंद की बल्कि पी. टी. उषा पर लिखी **वीरेन डंगवाल** की कविता की भी याद दिलाई। ये सारे नाम आने वाले वक्तों में जरूरी रोशनी का काम करेंगे। इन सब को सलाम कीजिए. -

काली तरुण हिरनी
अपनी लम्बी चपल टांगों पर
उड़ती है मेरे ग़रीब देश की बेटी
आंखों की चमक में जीवित है अभी
भूख को पहचानने वाली
विनम्रता
इसीलिए चेहरे पर नहीं है
सुनील गावस्कर की-सी छटा
मत बैठना पी टी ऊषा
इनाम में मिली उस मारुति कार पर
मन में भी इतराते हुए
बल्कि हवाई जहाज में जाओ
तो पैर भी रख लेना गद्दी पर
खाते हुए मुँह से चपचप की आवाज़ होती है ?
कोई ग़म नहीं
वे जो मानते हैं बेआवाज़ जबड़े को सभ्यता
दुनिया के सबसे खतरनाक खाऊ लोग हैं।

जुनैद के हत्या आरोपी पुलिस वालों पर कार्रवाई नहीं, मामला रफा-दफा करने की कोशिश

लगातार विवादों में फंसती जा रही है फरीदाबाद पुलिस, इस बार पूरे थाने पर ही एफआईआर

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

पुन्हाना/फरीदाबाद: जुनैद मामले में साइबर थाना पुलिस फरीदाबाद के करीब 10 पुलिसकर्मियों के खिलाफ गैर इरादन हत्या और हत्या का मामला दर्ज होने के बावजूद अभी तक पुलिस वालों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई है। अगर पुलिस वाले इस घटना में नामजद नहीं होते और आम नागरिक का मामला होता तो अब तक पुलिस आरोपियों को गिरफ्तार कर पूछताछ कर रही होती। साइबर थाना पुलिस फरीदाबाद के आरोपी पुलिसकर्मी अभी भी अपने पद पर कायम हैं और सारे सरकारी काम अंजाम दे रहे हैं। जब तक इन्हें गिरफ्तार नहीं किया जाता तब तक इन्हें निलंबित भी नहीं किया जा सकता। इस संबंध में विछोर पुलिस से संपर्क किया गया लेकिन फोन नहीं उठाया गया।

पिछले शुक्रवार को मेवात के जमालगढ़ निवासी जुनैद की मौत हो गई थी। परिवार ने फरीदाबाद साइबर पुलिस पर पिटाई से हुई मौत का आरोप लगाया था। इस घटना पर पुन्हाना में हिंसा होने और आला पुलिस अफसरों के हस्तक्षेप के बाद जब थाना बिछोर में केस दर्ज किया जा रहा था, तभी पुलिस जिस तरह का बर्ताव कर रही थी, सवाल उठ खड़े हुए थे। बिछोर थाने में जुनैद की हत्या के आरोप में जो एफआईआर दर्ज की गई है, उसमें जुनैद की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट का जिक्र नहीं है। नियमानुसार जुनैद की मां खतीजा की लिखित शिकायत के बाद मेवात पुलिस को जुनैद की मौत की जो वजह पोस्टमॉर्टम में बताई गई है, उसे लिखना चाहिए था। यह पुलिस का काम था। खतीजा ने अपने आरोप में अपने बेटे के मौत की वजह साइबर पुलिस वालों की पिटाई को ही बताया है लेकिन जब जुनैद का पोस्टमॉर्टम हो चुका है तो उसमें जो कहा गया है, पुलिस ने उसका जिक्र नहीं किया। इस तरह इस एफआईआर में कानूनी तौर पर यह आरोप नहीं लग सका है कि मां की शिकायत और पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के तथ्यों में तालमेल है। आरोपी पुलिस वालों को इसका फायदा बाद में अदालत में मिलेगा।

फरीदाबाद साइबर पुलिस पर गंभीर आरोप

जुनैद की विधवा मां खतीजा की शिकायत पर मेवात के बिछोर थाने में धारा 304 (गैर इरादतन हत्या), धारा 302 (हत्या) और धारा 34 (कई लोगों का आपराधिक इरादे से एक जैसा कृत्य) में केस दर्ज किया गया है। एफआईआर में दर्ज घटना के मुताबिक साइबर थाना फरीदाबाद के 10-12 पुलिस वाले जो तीन गाड़ियों में थे, 31 मई को शाम 6 बजे सुनेहड़ा गांव के पास जुनैद और नदीम को रोक लिया और गाड़ी में बैठा लिया। तभी इन पुलिस वालों को एक वैन्यू कार आती दिखी। उसमें बैठे युवक राजस्थान से एक शादी करके लौट रहे थे। पुलिस वालों ने उस कार को रोका और उसमें बैठे चारों युवकों को जबरन अपनी गाड़ी में डाल लिया और सीधे साइबर थाना फरीदाबाद ले आए।

अगले दिन 1 जून को जुनैद का भाई इरशाद गांव के अन्य लोगों के साथ साइबर पुलिस स्टेशन फरीदाबाद पहुंचा। एफआईआर में आरोप लगाया गया है कि साइबर थाना पुलिस ने जुनैद को 70 हजार रुपये की रिश्वत लेकर छोड़ दिया। बाकियों को भी पैसे लेकर छोड़ दिया गया। जुनैद को छोड़ते समय पुलिस वालों ने कई सादे कागजों पर जुनैद और उसके भाई इरशाद से हस्ताक्षर कराए। इन लोगों ने जुनैद और इरशाद से कहा कि अगर उन्होंने कहीं शिकायत की या जुनैद का मेडिकल कराया तो पूरे परिवार की जिन्दगी बर्बाद कर दी जाएगी।

पुलिस कस्टडी से जुनैद जब इरशाद पास आया तो उसने देखा कि उसके छोटे भाई के शरीर पर कई जगह चोटों के काफी निशान थे। इरशाद जब अपने भाई जुनैद को लेकर घर आ गया तो उसकी हालत बिगड़ने लगी। जुनैद ने अपनी पिटाई की पूरी दास्ता और उस पर थाने में जो बीता, अपनी मां को बताई। 2 जून को जुनैद की हालत काफी बिगड़ तो मां खतीजा पहले पुन्हाना में सरकारी अस्पताल इलाज के लिए ले गई। वहां कोई फायदा नहीं हुआ तो प्राइवेट डॉक्टर के पास इलाज के

साइबर पुलिस की हिरासत से लौटकर जुनैद ने अपनी चोटें घरवालों को दिखायी थीं

लिए ले गई, वहां भी जुनैद को आराम नहीं मिला। फिर परिवार ने तय किया कि निकट होडल शहर में किसी बड़े डॉक्टर को दिखाया जाए। जब वे जुनैद को होडल ले जाने लगे लगे लेकिन 11 जून को जुनैद की मौत हो गई।

विधवा मां की फरियाद नहीं सुनी

थाना विछोर में दर्ज एफआईआर में जुनैद की मां खतीजा के हवाले से लिखा गया है कि सब इंस्पेक्टर राजेश ने जुनैद की पिटाई करते हुए कहा था-मुल्लों, मैंने इसी तरह पहले भी तीन लोगों को जान से मार दिया है। इसी तरह तुम्हें भी मार दूंगा। जुनैद की मां खतीजा ने बताया कि जुनैद और बाकी युवकों को पुलिस वाले शिफ्टों में आकर पीटते थे। उनसे कहा जाता था कि तुम्हारी जिन्दगी बर्बाद कर देंगे।

परिवार ने आरोप लगाया है कि 1 जून को 70 हजार रुपये मिलने के बाद भी साइबर थाना फरीदाबाद पूरे परिवार के अगले कदम पर नजर रख रही थी। कोरे कागजों पर हस्ताक्षर उनके पास पहले से ही थे। इस बीच उन्हें पता चल चुका था कि जुनैद की तबियत लगातार खराब हो रही है। खतीजा ने बताया कि 5 जून को साइबर थाना फरीदाबाद की पुलिस फिर उनके घर जमालगढ़ आई और उनके दो अन्य बेटों इरशाद और आजाद को उठा ले गईं। खतीजा ने पुलिस वालों के पैर पकड़ लिए और कहा कि जुनैद को उन्होंने वैसे ही अधमरा कर दिया है, इन दोनों बेटों को न ल जाए। इस पर पुलिस वालों ने फरीदाबाद आकर बात करने को कहा। खतीजा ने उनसे यह भी कहा कि अगर उन्हें पैसे चाहिए तो वो इंतजाम करके और पैसे दे देगी। लेकिन पुलिस वाले नहीं माने और जबरन दोनों को ले गए। इस समाचार के लिखे जाने तक इरशाद और आजाद फरीदाबाद साइबर थाने की कस्टडी में ही हैं। फरीदाबाद पुलिस ने कल अपने बयान पर इस पूरे अनपढ़ परिवार पर साइबर ठगी का आरोप लगाया था। साथ ही यह भी कहा था कि जुनैद निर्दोष था, इसलिए छोड़ दिया गया था। वह किडनी की बीमारी से ग्रसित था, इसलिए उसकी मौत हुई है।

जुनैद की मां खतीजा ने जिन पुलिस वालों को एफआईआर में नामजद किया है, उसमें सब इंस्पेक्टर राजेश, सुरजीत, हेड कॉन्स्टेबल नरेश, दलबीर, एएसआई नरेन्द्र, जावेद, एसएचओ बसंत, अन्य 4-5 अज्ञात शामिल हैं। यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि मुलजिमों के नाम क्रमानुसार हैं यानी एफआईआर में सबसे पहले सब इंस्पेक्टर राजेश और सबसे अंत में एसएचओ बसंत का नाम है। यानी इन्हें आरोपी इसी क्रम में बनाया गया है। इसी क्रम में धाराएं भी लगाई गईं हैं यानी हत्या के आरोप की धारा 302 दूसरे नंबर पर है।

जुनैद की मौत की सूचना मिलते ही फरीदाबाद पुलिस ने बयान जारी किया जिसमें कहा गया कि जुनैद निर्दोष था, इसलिए उसको छोड़ दिया गया था। उसकी मौत किडनी का रोगी होने के कारण हुई है, पुलिस की पिटाई से उसकी मौत नहीं हुई है। फरीदाबाद पुलिस ने जुनैद के घर वालों को बहुत बड़े अपराधी बताया। जुनैद जब घर पहुंचा और उसकी हालत बिगड़ने लगी तो साइबर पुलिस ने उसके दोनों भाई इरशाद और आजाद को भी 5 जून को जमालगढ़ में उनके घर से उठा लिया। उन दोनों का कोई आपराधिक रेकॉर्ड नहीं है।

पुलिस के आरोपों को चुनौती

गांव जमालगढ़ के लोगों ने साइबर थाना पुलिस फरीदाबाद के आरोपों को गलत बताया। इन लोगों ने कल भी कहा था कि जुनैद किडनी रोगी था, यह बात फरीदाबाद पुलिस को कैसे मालूम हुई। सच्चाई तो यह है कि साइबर पुलिस शिकार की तलाश में निकली थी। इन्हें सुनेहड़ा गांव के पास जो भी सॉफ्ट टारगेट दिखा, उसे उन्होंने पकड़ लिया। अगर जुनैद निर्दोष था तो उसके परिवार से 70 हजार रुपये क्यों लिए गए। इसी तरह बाकी युवकों को भी छोड़ने के एवज में पैसे लिए गए। फरीदाबाद पुलिस को यह पता चल गया कि जुनैद का परिवार अभी और पैसे दे सकता है तो उसके दो भाइयों को भी 5 जून को घर से उठाकर ले आए। अगर दोनों भाई अपराधी थे तो क्या उन्होंने जमालगढ़, पुन्हाना या विछोर में मेवात पुलिस को सूचित किया था। गांव वालों का कहना है कि खतीजा के पति रुद्दर का बहुत पहले निधन हो चुका है। विधवा मां ने इन बच्चों को बहुत जतन से पाला है। सभी भाई कोई न कोई मेहनत का काम करते थे और इसी के सहारे परिवार की गाड़ी चल रही थी। जुनैद पेंटर का काम करता था। बाकी भाई भी कोई न कोई काम करते थे। पूरा परिवार अनपढ़ था, ये लोग साइबर क्राइम में कैसे संलिप्त हो सकते हैं, फरीदाबाद पुलिस का यह आरोप फर्जी है।

किस वजह से हुई एफआईआर

पुलिस हिरासत में या बाद में मौत होने पर पुलिस वालों के खिलाफ एफआईआर दर्ज होना बहुत मुश्किल होता है। समझा जाता है कि मेवात के सभी राजनीति नेताओं के एक होने और डीजीपी मनोज यादव के निर्देश पर यह एफआईआर दर्ज हुई है। जुनैद की मौत और लोगों के गुस्से की वजह से सारे राजनीतिक दलों के नेताओं ने पुलिस अफसरों से बात करके इसमें एक्शन लेने का दबाव डाला।

एमएलए मोहम्मद इलियास खान ने कल ही कह दिया था कि चाहे उन्हें हथकड़ी लग जाए, वो एक बेकसूर की मौत के मामले में पुलिस वालों को आसानी से नहीं छोड़ेंगे। ऐसे तमाम मामलों की वजह से फरीदाबाद पुलिस कमिश्नर ओ.पी. सिंह की कार्यप्रणाली पर सवाल उठ रहे है। उनके मातहत काम करने वाले पुलिसकर्मी किसी न किसी संगीन केस में फंसते हुए नजर आते हैं। हाल ही में एक शराब ठेके पर पुलिस कार्रवाई से भी खासी किरकिरी हुई थी। इसमें शराब ठेकेदार ने पुलिस वालों पर रिश्वत मांगने का आरोप लगाया था। ठेकेदार का आरोप था कि जब उसने रिश्वत नहीं दी तो उसका ठेका पुलिस वालों ने लूट लिया। इस घटना पर हरियाणा आबकारी विभाग ने भी पुलिस वालों पर कड़ी नाराजगी जताई थी।